॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री भगवान श्री गणेश नमः ॥

श्री संकटनाशन गणेश स्तोत्र

Ganesh Stotra — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: देवर्षि नारद (नारद पुराण) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

प्रारंभ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ नारद उवाच ॥

भावार्थ: विघ्नों के नाशक और प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश जी को नमन करते हुए देवर्षि नारद जी समस्त भक्तों के कल्याण और संकट निवारण हेतु इस पावन संकटनाशन गणेश स्तोत्र का गान आरंभ करते हैं।

श्लोक १

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥

भावार्थ: माता पार्वती (गौरी) के परम प्रिय पुत्र, सर्वविघ्नहर्ता भगवान विनायक को सिर झुकाकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हुए, अपनी दीर्घायु, समस्त मनोकामनाओं और धर्म-अर्थ-काम की सिद्धि के लिए भक्तों के हृदय में सदा वास करने वाले प्रभु का नित्य स्मरण करना चाहिए।

श्लोक २

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ २ ॥

भावार्थ: भगवान गणेश का पहला पावन नाम 'वक्रतुण्ड' (घुमावदार सूंड वाले), दूसरा नाम 'एकदन्त' (एक दांत वाले), तीसरा नाम 'कृष्णपिङ्गाक्ष' (काली और भूरी आभायुक्त करुणामयी आंखों वाले) और चौथा नाम 'गजवक्त्र' (हाथी के समान मुख वाले) है।

श्लोक ३

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥ ३ ॥

भावार्थ: प्रभु का पांचवां नाम 'लम्बोदर' (विशाल उदर में समस्त ब्रह्मांड को समाहित रखने वाले), छठा नाम 'विकट' (विशाल एवं अद्भुत स्वरूप वाले), सातवां नाम 'विघ्नराजेन्द्र' (समस्त विघ्नों पर आधिपत्य रखने वाले) तथा आठवां नाम 'धूम्रवर्ण' (धुएं के समान आभा वाले) है।

श्लोक ४

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४ ॥

भावार्थ: नौवां नाम 'भालचन्द्र' (मस्तक पर चंद्रमा को धारण करने वाले), दसवां नाम 'विनायक' (सर्वश्रेष्ठ नायक व विघ्नहर्ता), ग्यारहवां नाम 'गणपति' (शिवजी के समस्त गणों के स्वामी) और बारहवां नाम 'गजानन' (हाथी के मुख वाले मंगलकारी प्रभु) है।

श्लोक ५

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ॥ ५ ॥

भावार्थ: जो भी मनुष्य प्रातः, मध्याह्न और सांध्य—तीनों संध्याओं में एकाग्रचित्त होकर भगवान गणेश के इन बारह पावन नामों का पाठ करता है, उसे किसी भी प्रकार के विघ्न या संकट का भय नहीं रहता; हे प्रभो! यह पाठ उसके समस्त कार्यों में पूर्ण सिद्धि प्रदान करने वाला है।

श्लोक ६

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्॥ ६॥

भावार्थ: इस दिव्य स्तोत्र के प्रभाव से विद्या की कामना रखने वाले विद्यार्थी को उत्तम विद्या व तीव्र बुद्धि प्राप्त होती है, धन चाहने वाले को अटूट लक्ष्मी व ऐश्वर्य मिलता है, संतान की इच्छा रखने वाले को सुयोग्य संतान की प्राप्ति होती है और मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले साधक को परम गति प्राप्त होती है।

श्लोक ७

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥ ७॥

भावार्थ: यदि कोई साधक पूर्ण श्रद्धा और नियम के साथ इस गणपति स्तोत्र का निरंतर जप करे, तो उसे मात्र छह महीने में शुभ फल की प्राप्ति होने लगती है और एक वर्ष में समस्त मनोवांछित सिद्धियाँ अवश्य प्राप्त हो जाती हैं—इसमें रत्ती भर भी संशय नहीं है।

श्लोक ८

अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥ ८॥

भावार्थ: जो व्यक्ति इस पावन स्तोत्र को अपने हाथों से लिखकर आठ सुपात्र ब्राह्मणों या विद्वान भक्तों को श्रद्धापूर्वक समर्पित (दान) करता है, उस पर भगवान श्री गणेश की ऐसी असीम कृपा होती है कि उसे सभी प्रकार की विद्याएं और अलौकिक ज्ञान स्वतः सिद्ध हो जाते हैं।

समापन

॥ इति श्रीनारदपुराणे संकटनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं संपूर्णम्॥

भावार्थ: इस प्रकार देवर्षि नारद द्वारा विरचित श्रीनारद पुराण के अंतर्गत 'संकटनाशन गणेश स्तोत्र' संपूर्ण हुआ। भगवान श्री गणेश अपने सभी भक्तों के संकटों का निवारण करें।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **शुभ दिन एवं समय:** संकटनाशन गणेश स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन प्रातःकाल पूजा के समय करना श्रेष्ठ है। विशेष रूप से **बुधवार**, **संकष्टी चतुर्थी**, **विनायक चतुर्थी** तथा **गणेशोत्सव** के पावन दिनों में इसका पाठ अनंत गुना फलदायी होता है।
- **शुद्धि एवं दिशा:** स्नानादि से पवित्र होकर स्वच्छ पीले या लाल रंग के वस्त्र धारण करें। पूजा स्थल पर पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके कुशा या ऊनी आसन पर बैठें।
- **दीप एवं गणेश पूजन:** भगवान गणेश की प्रतिमा या चित्र के समक्ष शुद्ध गाय के घी अथवा तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करें। सुगंधित धूप और अगरबत्ती जलाएं।
- **प्रिय अर्पण:** गणपति बप्पा को लाल सिंदूर का तिलक लगाएं, अक्षत अर्पित करें और उनकी सर्वाधिक प्रिय **२१ दूर्वा (दूब घास) की गांठें** तथा लाल गुड़हल का पुष्प 'ॐ गं गणपतये नमः' बोलते हुए अर्पित करें। भोग के रूप में मोदक, बेसन के लड्डू अथवा गुड़-चने का नैवेद्य लगाएं।
- **पाठ की संख्या:** हाथ में थोड़ा जल और अक्षत लेकर संकल्प लें, फिर शांत मन से स्तोत्र के सभी आठ श्लोकों का स्पष्ट उच्चारण के साथ पाठ करें। नित्य १, ३, ७ या ११ बार पाठ करना विशेष फलदायी माना गया है।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **समस्त विघ्नों और संकटों से मुक्ति:** *'न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो'* — प्रतिदिन तीनों संध्याओं में इसका पाठ करने वाले मनुष्य को किसी भी प्रकार की बुरी नजर, ग्रह दोष, कानूनी अड़चन अथवा आकस्मिक संकट का भय नहीं रहता।
- **विद्यार्थियों के लिए विद्या एवं बुद्धि प्राप्ति:** *'विद्यार्थी लभते विद्यां'* — भगवान गणेश बुद्धि के अधिष्ठाता हैं। जो छात्र परीक्षा, उच्च शिक्षा या प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, उनके लिए यह स्तोत्र स्मरण शक्ति और तीक्ष्ण बुद्धि प्रदान करने वाला सिद्ध होता है।
- **व्यापार वृद्धि एवं धन-समृद्धि:** *'धनार्थी लभते धनम्'* — व्यापार में घाटा, नौकरी में रुकावट या ऋण (कर्ज) के भार से दबे व्यक्तियों को इस पाठ से आर्थिक स्थिरता और अटूट लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
- **संतान सुख एवं पारिवारिक शांति:** *'पुत्रार्थी लभते पुत्रान्'* — संतान प्राप्ति की इच्छा रखने वाले दंपतियों तथा गृहक्लेश से परेशान परिवारों के लिए यह स्तोत्र सुख-सौहार्द और वंश वृद्धि का वरदान देता है।
- **आत्मिक शांति और मोक्ष:** *'मोक्षार्थी लभते गतिम्'* — सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के साथ-साथ यह स्तोत्र अंतःकरण की शुद्धि कर जीवन के अंत में सद्गति और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है।